''गाँधी जी और सामाजिक न्याय''

अभय कुमार
शोध छात्र, दर्शन विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
सागर (म.प्र.) 470003
मो. 9131373073
ईमेल– abhayipr@gmail.com

शोध निर्देशक
प्रो. अखिलेश्वर प्रसाद दुबे
दर्शन विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
सागर (म.प्र.) 470003

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी बचपन से ही अपनी माँ के सानिध्य व माता तुल्य आया (दाई माँ) के साथ ज्यादा समय गुजारते थे। वे बहुत ही आज्ञाप्रिय, होनहार, ईमानदार तथा तर्कशील, बुद्धि विलक्षण के छात्र भी थे। एक बार बचपन में 10वीं की परीक्षा में इनके गुरु द्वारा बताये गए उत्तर को उन्होंने परीक्षा में नहीं लिखा और उत्तर में ये बताया कि जितना मुझे ज्ञान है, उतना ही मैं लिखूँगा, अंततः वे गुरु द्वारा परीक्षा के दौरान बताये गए उत्तर को अपनी उत्तरपुस्तिका में नहीं लिखे, जो आता था वे लिखे। ये क्रिया अन्य विद्यार्थीयों के साथ एक न्याय की समझ से देखा जा सकता है।

पुनश्चः देखा जाए तो बचपन में इनके परिवार जो कि उच्च कोटि से अपना पहचान रखता था। अन्य निम्न वर्गों जो कि इनके राजकोट (मकान) में सफाई का काम करते थे तो वहां भी अपनी माता से तर्क कर बैठते थे कि माँ भंगी के साथ उठने, बैठने या खाने से कोई भंगी नहीं हो जाता है। अतः मानव के साथ नस्लभेद, न्याय के रूप में यहाँ गाँधी जी की तर्कशीलता देखी जा सकती है जोकि सामाजिक न्याय का अभिन्न हिस्सा है। गाँधी जी का सूत्र चिंतन के रूप में भी वे मानव मात्र के कल्याण हेतु सामाजिक न्याय के रूप में परिलक्षित होता है। गांधीजी का ताबीज सूत्र ''मैं तुम्हें एक ताबीज देता हूँ। जब तुम्हें दुविधा हो या तुम्हारा अहम् तुम पर चढ़कर बोले, तो इसका अभ्यास करोः अपने मन–मस्तिष्क में स्वयं द्वारा अब तक देखे गए सबसे निर्धन व असहाय व्यक्ति की छवि को निहारो और फिर स्वयं से पूछो कि जो कार्य मैं करने जा रहा हूँः 1. क्या इससे उसको कुछ प्राप्त होगा या उसका कुछ फायदा होगा? 2. क्या इससे उसे अपनी नियति और जीवन को नियंत्रित करने की शक्ति प्राप्त होगी। 3. क्या इससे स्वराज्य सुलभ होगा अथवा

देश के लाखों शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से भूखे लोगों की स्वतंत्रता की शर्त पूरी होगी? तब तुम पाओगे कि तुम्हारी दुविधा या शंका तुम्हारे अहम् के साथ खुद–ब–खुद तिरोहित हो जाएगी और तुम्हें असीम सुख तथा आत्मसन्तोष की प्राप्ति होगी।''[1] अर्थात् गाँधी जी का सूत्र था कि जब भी आप दुःख में हो तो अपने से नीचे के स्तर के मानव के दुःख के बारे में देखे तो आपकी समस्या स्वयं ही दूर जायेगी तथा कोई निर्णय भी ले तो यह जरूर ध्यान दे कि वे निर्णय संसार के सबसे निचले स्तर के मानव के लिए भी कल्याणकारी हो।

गाँधी जी का दार्शनिक विचार भी दीर्घकालीन व टिकाऊ समाधान को ढूढने का अथक प्रयास था। इस प्रकार देखा जाए तो दर्शन वह अदृश्य नींव है जिस पर प्रत्येक सामाजिक संगठन का धौंस खड़ा है। यह समस्त सामाजिक गतिविधियों की धुरी एवं समस्त सामाजिक दर्शनों का ही नहीं समस्त विज्ञानों अथवा ज्ञान का भी आधार है।

सः ब्रह्मविद्यां सर्वविधाप्रतिष्ठामयर्वाय ज्येष्ठपत्राय प्राह।

अर्थात! ब्रह्मा ने अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्व को ब्रह्म विद्यां का उपदेश दिया जो समस्त विद्वानों का आधार है। – मुंडकोपनिषद्, 1,1,1

अतः राष्ट्रपिता महात्मा गांधी वे मानव थे जिन्होंने तीस करोड़ जनता को विद्रोह करने के लिए आन्दोलित किया, जिन्होंने अंग्रेजी साम्राज्य की नींव हिला दी और जिन्होंने मानव राजनीति में पिछले दो हजार वर्षों के सर्व शक्तिमान धार्मिक स्तंभ का समावेश किया। गाँधी जी का उद्देश्य समाज के किसी विशेष अंग का पुनर्गठन न होकर मानव के समस्त अस्तित्व का पुनर्निर्माण था। वे एक सुधारक नहीं थे। अन्य सामाजिक क्रांतिकारी चिंतकों की भांति जीवन की समस्याओं के प्रति उनका भी एक विशिष्ट उपागम था।[2]

जब राष्ट्रपिता महात्मा गांधी अपनी शिक्षा प्राप्त कर विदेश से भारत वापिस लौट रहे थे तो अपने गुरु के कथनानुसार भारत भ्रमण के लिए वे ट्रेन में चढ़कर भारत के विभिन्न राज्यों का भ्रमण किया। उन्होंने वहां एक दृश्य देखा कि एक स्त्री खेत में काम कर रही है जिसका शरीर का ऊपरी हिस्सा अर्धनग्न था, जिसको देखकर अचानक वह स्त्री गाँधी जी के सामने अपने को असहज महसूस की तो गाँधी जी के मन में यह विचार आया कि जब हमारे देशवासियों के पास तन ढ़कने

को वस्त्र नहीं है तो मुझे भी ये सूट–पैंट–कोट पहनने का कोई हक नहीं है तो जो वे उस समय पगड़ी बांधे थे उसको उतारकर उस औरत को तुरन्त ही तन ढ़कने को कहाँ तथा अगले दिन वे गाँधी से महात्मा के वेश में परिलक्षित हो गए। उनका शरीर का वर्जन कुछ इस प्रकार था– शरीर दुबलापन, रंग साँवला, नाक लम्बी तथा एक चश्मा, एक पगडंडी, एक चादर बड़ी, तथा पैरों में एक खड़ाऊ जो कि एक साधारण मानव को जीवन जीने तथा तन को ढ़कने के लिए पर्याप्त था वे आजीवन मरते दम तक इन्हीं वेश–भूषा में दिखाई पड़ते थे। जो कि सामाजिक न्याय व समाज के लिए एक बड़ा उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है।

गाँधी जी द्वारा चलाये गये आन्दोलनों तथा न्यायासिता का सिद्धांत एवं पर्यावरण पर उनके विचार सर्वविदित है कि शोषण के खिलाफ, सम्पत्ति के एकाधिकार के खिलाफ, जीवन की असुरक्षा के खिलाफ की न्याय को प्रदर्शित करता है।

गाँधीजी ने दलितों तथा स्त्रियों के लिए भी न्याय के लिए जल और अहिंसा रूपी शस्त्रों का प्रयोग करते हुए उनके साथ भी न्याय दिलाने का भरसक प्रयास किया। दलितों को 'हरिजन शब्द' जो कि ईश्वर का कहकर मान बढ़ाया तथा आलोचकों के उस दृष्टिकोण को जहां गांधी जी का दलित जो दो स्त्रियों के कांधे पर हाथ रखकर सैर करना खूब चर्चा का केन्द्र बना था। वहाँ एक महात्मा की दार्शनिक दृष्टिकोण कुछ इस प्रकार था कि मैं मीरा और बेन के ऊपर हाथ रखकर चलता हूँ जो कि अन्य सांसारिक मानव की दृष्टि में गलत है लेकिन उन्हें इस दृष्टिकोण से देखता हूं कि वे दृटि है ''बिना स्त्रियों के सहारे आप एकपल भी खड़े नहीं हो सकते हो अतः उन्हें भी बराबर का मौका समाज में देना चाहिए तभी समाज का विकास हो सकता है। ये भी सामाजिक न्याय के रूप में देखा जा सकता है। गांधी जी के विभिन्न आन्दोलनों – असहयोग, सत्यागृह, नमक इत्यादि आन्दोलनों का बस एक ही अर्थ था कि लोभ, क्रोध, मोह रूपी सांसारिक मानव से सभ्य मानव की सुरक्षा करना था रामराज्य की स्थापना कराया जहां समाज में किसी भी तरह की विंगतियों का उद्‌भव भी न हो सके।

गांधीवादी विचारधारा में समाज व सामाजिक न्याय का सम्बन्ध

गांधीजी का मानना था कि समाज व सामाजिक व्यवस्था सभी को समान रूप से प्रदान की जानी चाहिए। क्योंकि मानव एकाकी जन्म लेता है किन्तु ऐसा लगता है कि समाज में रहना उसका स्वभाव है। इसीलिए समस्त समाज विज्ञानों के जनक अरस्तु ने उसे सामाजिक प्राणी कहा था। क्योंकि समाज इतने अन्तरावललित एवं परस्पर पूरक बन गये हैं कि एक के बिना दूसरे की सत्ता, स्थिरता एवं प्राप्ति की कल्पना करना भी कठिन है। अंततः समाज के बिना मानव केवल अन्ध पशु है और मानव के बिना समाज विंगत एवं अर्थहीन है। बहुत से व्यक्ति मिलकर एक समाज की रचना करते है जो बदले में उनके अस्तित्व को सुखमय एवं उनके जीवनदर्शन की उपलब्धि को संभव बनाता है। गांधीजी शासन शास्त्रज्ञ नहीं थे और हमें उपलब्ध उनकी असंख्य लिखित एवं मौखिक साक्षियों में किसी समाज व्यवस्था के पुखानुमुंख विवरण की खोज करना व्यर्थ है। किन्तु तो भी यह मत व्यक्त करना है यह अद्वितीय क्रांतिकारी।[3]

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के द्वारा आजीवन चलाये गए आन्दोलनों में भी शोषण, भ्रष्टाचार, न्याय के प्रति सत्य और अहिंसा के धरातल पर सामाजिक ज्वलंत समस्याओं का दीर्घजिवी व टिकाऊ समाधान ढूढ़ने का प्रयास निरन्तर प्रभावी रहा।

भारत का संविधान भी मानता है कि धर्म, जाति, हिंसा, नस्ल, भाषा के आधार पर किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं किया जायेगा। यदि किया जाता है तो करने वाले के खिलाफ दण्ड का प्रावधान था। प्रथम दृष्टया गांधीजी धर्म के प्रवाहित होते है और अंततः अन्य धर्मों का गहन अध्ययन कर पाते है ''मजहब (धर्म) नहीं सिखाता आपस में बैर रखना'' अर्थात् अपना धर्म को सम्मान दो, मगर अन्य धर्मों का भी आदर करो।

जाति के दृष्टिकोण में वे मानव को 'ईश्वर अंश जीव अविनासी' कबीरदास की उक्तियों से सहमत थे।

नस्लभेद – वे स्वयं डरबन में दक्षिण अफ्रीका जाते समय नस्लभेद के शिकार हुए जिसका परिणाम अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा।

भाषा – गांधीजी गुजराती भाषा के बहुत जी अच्छे जानकार थे। फिर भी वे हिन्दी भाषा व अन्य भाषाओं का भी सम्मान करते थे। अतः गांधीजी के लिए संविधान में उद्धृत नियम से सहमत थे, वे किसी भी मानव के साथ अन्याय होते

देख तुरन्त ही आन्दोलन, सत्यागृह व उपवास के अनशन पर बैठ जाते थे तथा उस व्यक्ति का समाज के समुदाय के न्याय के लिए सदैव तत्पर रहते थे।

यहाँ तक कि गांधीजी स्त्री उत्थान के लिए भी सदैव तत्पर रहते थे। वे उन शादी समारोह में तब तक नहीं जाते थे जब तक वह अन्तर्राजातीय विवाह न हो, वे केवल अन्तर्राजातीय विवाह में जाते थे तथा उनके साबरमती आरम में भी उच्च वर्ग के रहने के साथ एक भंगी परिवार को भी उन्हीं के समान रहने की सारी सुविधाऐं प्रदान की गई थी।

आर्थिक न्याय– गांधीजी आर्थिक न्याय के रूप में देखा जाय तो साबरमती आश्रम में सूत बनाने व सूत बेचने के हिसाब किताब में यदि 0.50 पैसे भी किसी के बनते थे तो गांधीजी उस व्यक्ति को ये मुद्रा भेंट करने के पक्ष में थे लेकिन जब कभी उनकी भावनाओं की कद्र नहीं होती थी तो गांधी दोषी व्यक्ति को दण्ड का प्रावधान भी रखते थे।

राजीतिक न्याय के लिए गांधीजी का मानना था कि किसी भी देश की समाज व्यवस्था राजनीति से प्रभावित होती है। अतः 'धर्म विहीन राजनीति पतन' का कारण होती है' अर्थात् जिस राजनीति में धर्म का सम्मान नहीं किया जाता है वे अन्ततः समाप्त हो जाती है तथा प्रजा में असंतोष प्राप्त होता है।

शारीरिक न्याय – मन, वचन, कर्म से किसी भी परिस्थितियों में किसी भी प्रकार की हिंसा पक्ष या विपक्ष न करने की जिन्दगी पर अपील यह बताती है कि बैरं–बैरं कभी शांत भी होता है। अतः अहिंसा की स्थापना अत्यंत जरूरी है।

कर्मों के साथ न्याय – गांधी जी का मानना है कि संसार के सभी मानव अपना कर्तव्य ईमानदारी से करे तो उनके अधिकार स्वतः प्राप्त हो जायेगा। लेकिन संसार में अधिकार के लिए संघर्ष व कर्तव्य ईमानदारी से करने की प्रथा का पाया जाना दुःखकर है।

पूंजीवादी वर्ग को को दृष्टि की सिद्धांत के द्वारा अन्य प्राणियों के लिए भी उचित दृष्टिकोण रखना चाहिए। प्रकृति सबके लिए एक समान है तथा यहां कोई उच्च–निम्न से प्रभावित नहीं है। संसार के सारे मानव जीवन अनुसार दया करो। समाज के विभिन्न विसंगतियों को दूर करने के लिए गांधीजी से व्यवहारिक दर्शन का प्रयोग बहुत ही तर्कपूर्ण मानते थे।

सामाजिक न्याय हेतु गांधीवादी विचारधारा सदैव अहिंसा, सत्य के धरातल पर खड़ी रही किसी भी परिस्थितियों में हिंसा का साथ नहीं दिया। उनका शस्त्र था पड़ताल, धरना, असहयोग, हिजरत, सविनय अवज्ञा, उपवास इत्यादि। अंततः गांधीजी के आदर्श समान व्यवस्था के लिए उद्धृत किया है– ''मैं पहले ही यह नहीं बता सकता कि पूण्रतः अहिंसा पर आधारित शासन कैसा होगा। फिर भी उनकी पुस्तक हिन्द स्वराज और उनके भाषाणों, लेखों वक्तव्यों आदि से उनके आदर्श समाज की कल्पना की जा सकती है।''[4]

अंततः हम कह सकते है कि गांधीजी ने सारे सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनैतिक दर्शन के पीछे मानव सम्बन्धों को सुधारने की चेष्टा की है। जहां मानव अनदार है, जहां उसे दास बनाने की प्रवृत्ति है, जहां उसका शोषण होता है, वहां गांधी जी उस स्थिति को सुधारने के लिए प्रयत्नशील है। गांधीजी का मानववाद प्रत्येक आंख से आंसू पोंछ डालना चाहता है। वह पृथ्वी पर जीवन को जीने योग्य बनाना चाहते है। अतः गांधीजी प्रत्येक मानव के साथ सामाजिक न्याय की बात करते हैं और वह पक्ष हो या विपक्ष का हो। गांधी जी कहते हैं –

''रघुपति राघव राजाराम, पतिपतावन सीताराम
सबको सम्मिति दे भगवान, ईश्वर अल्लाह तेरे नाम।''[5]

गांधीजी द्वारा बताये गए ''एकादश व्रत' में सामाजिक न्याय की स्थापना हो सकने की संभावना स्वीकार होती है–

अहिंसा, सत्य, अस्तय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह
शरीश्रम, अस्वाद, सर्वत्र, भयवर्जन।
सर्व धर्म समानत्व, स्वदेशी, स्पर्शभावना
ही एकादश सेवामी नमते व्रतनिश्चये।।[6]

अर्थात् सामाजिक और राजनैतिक, व्यक्तिगत और धार्मिक जीवन में इन्हीं व्रतों का आचरण गांधी जी करते हैं। उनकी विभिन्न प्रवृत्तियों की इन्हीं मानव कृतियों से प्रेरित और अनुप्रभावित है।

गांधीजी के मानववाद में मानव को समदर्शी होना ही अंगीकृत है। गीता के अनुवाद वह ब्राह्मण, गो दानी, श्वास और चाण्डाल में अभेद–भावन करने वाला

होना चाहिए। अत्यक, अछूत, पंचकोना, शूद्र आदि को जाने वाले समाज के यहां को गांधी ने उठाकर मानव कोटि में लाने का महान प्रयत्न किया।[7]

संदर्भ सूची –

1. डॉ., एस.एन. सुब्बाराव, सफल प्रबंधन : गांधी दर्शन, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2013, पृ.21
2. यंग इण्डिया, 12 मई 1920, 25 मई, 13 जुलाई, 25 अगस्त 1925
3. सर्वोदय समाज एक समस्त संस्कृत शब्द है जिसका अभिप्राय ही एक ऐसा समाज जिसका उद्देश्य है सबका अधिकतम कल्याण।
4. राम आहुजा, सामाजिक समस्याऐं, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2003, पृ.12
5. सम्पूर्ण वागऽमय गांधी,
6. गांधी ग्रन्थ, अनुवादक श्री प्रेमनारायण माथुर, समाजशास्त्र परिसर वनस्थली विद्यापीठ जयपुर, संस्करण, 2 अक्टूबर 1949
7. विद्या–विनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गणि हस्तिनि। शुचि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः।। (गीता 5–18)